दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट

संस्थान के संस्थापकों का उद्देश्य भविष्य के सुपरमैन को विकसित करना था। इन ऊंचे आदर्शों के अनुसरण में, दयालबाग़ में शिक्षा की उत्पत्ति 1 जनवरी 1917 को राधास्वामी मत के पांचवें श्रद्धेय गुरु, सर आनंद सरूप द्वारा राधास्वामी शैक्षिक संस्थान (आर.ई.आई.) के स्थापना के साथ हुई। अपनी मामूली शुरुआत से, आरईआई के रूप में यह केंद्र न केवल विकसित हुआ बल्कि समाज की बदलती और उभरती ज़रूरतों के जवाब में नए संस्थानों को भी जन्म दिया। दयालबाग़ में शिक्षा के इतिहास में दूरगामी परिणाम की एक महत्वपूर्ण तिथि 1973 में एक पंजीकृत निकाय के रूप में डीईआईकी स्थापना थी, जिसने दयालबाग़ के सभी शैक्षणिक संस्थानों को एकीकृत और एक छतरी के नीचे ले आया। 1975 में, संस्थान ने एक "संपूर्ण व्यक्ति" विकसित करने के मिशन उद्देश्य के साथ एक अभिनव और व्यापक शैक्षिक नीति तैयार की, जिसे उत्तर प्रदेश सरकार, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी), और शिक्षा और संस्कृति मंत्रालय (विभाग) से अनुमोदन प्राप्त हुआ। 16 मई 1981 को, भारत सरकार ने यूजीसी अधिनियम की धारा 3 के तहत डीईआई, आगरा, जिसमें डीईआई महिला प्रशिक्षण कॉलेज, आरईआई डिग्री कॉलेज, दयालबाग़ शामिल हैं, को डीम्ड विश्वविद्यालय घोषित किया। तदनुसार, तीन पूर्ववर्ती कॉलेजों का अस्तित्व अलग-अलग संस्थाओं के रूप में समाप्त हो गया और शैक्षणिक सत्र 1981-82 से कला, वाणिज्य, शिक्षा, इंजीनियरिंग और विज्ञान संकाय के रूप में कार्य करना शुरू कर दिया। तब से संस्थान को भारतीय विश्वविद्यालय संघ की सदस्यता प्रदान की गई है।

DEI ने कई पुरस्कार जीते हैं, डिस्ट्रिक्ट ग्रीम चैंपियन अवार्ड-2021, यूपी स्टेट एनर्जी अवार्ड्स-2017, 2018, 2019, 2020, बेस्ट ग्रीन कैंपस अवार्ड- TEQIP, AICTE- उत्कर्ष संस्थान विश्वकर्मा अवार्ड-2020। यूएन एसडीजी एक्शन अवार्ड जीतने से डीईआई में मॉडल शैक्षिक प्रणाली की सराहना होगी और इसकी उपलब्धि में एक अतिरिक्त उपलब्धि जुड़ जाएगी। हाल के वर्षों में, DEI ने 21 बीवॉक कार्यक्रमों के साथ इतने बड़े पैमाने पर कौशल विकास की पहल शुरू की है, जितने देश में किसी भी विश्वविद्यालय ने नहीं की है। इसमें कृषि, कृषि प्रौद्योगिकी, कृषि प्रबंधन, कंप्यूटर विज्ञान, एआई और रोबोटिक्स, आईओटी, टेलीमैटिक्स, नवीकरणीय ऊर्जा, लॉजिस्टिक्स आदि में पूर्ण विशेष कार्यक्रम हैं। डीईआई कृषि उत्पादकता बढ़ाने और किसानों कोअधिकतम लाभ दिलाने केलिए गंभीर प्रयास कर रहा है।सब्जियों की संरक्षित खेती को बढ़ावा देना और विशिष्ट लक्षित फ़सलों की प्रथाओं के पैकेज का मानकीकरण और कम लागत वाली तकनीक विकसित करना, किसानों को छोटी जोत पर भी ग्रीनहाउस लेने के लिए प्रोत्साहित करना प्राथमिकता वाले हस्तक्षेप क्षेत्र हैं।

प्रधान संरक्षक

प्रो. सी. पटवर्धन
निदेशक
दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट

संरक्षक

प्रो. आनंद मोहन
कुल सचिव
दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट

सलाहकार समिति

प्रो. संगीता सैनी, प्रमुख, कला संकाय
प्रो. वी के गंगल, प्रमुख, वाणिज्य संकाय
प्रो. वंदना गौड़, प्रमुख, सामाजिक विज्ञान संकाय
प्रो. नंदिता सत्संगी प्रमुख, शिक्षा संकाय
डॉ. एस. के. सोनी, प्रमुख, विज्ञान संकाय
प्रो. अजय सक्सेना

आयोजन समिति

प्रो. प्रवीण सक्सेना, प्रो. शर्मिला सक्सेना
प्रो. जे. के. वर्मा, प्रो. लवली शर्मा,
डॉ. बानी दयाल धीर, डॉ. अनीता सिंह,
डॉ. मीनाक्षी ठाकुर, डॉ. रंजना पाण्डेय,
डॉ. लकी टोंक, प्रो. रूपाली सत्संगी,
डॉ. नमस्या, डॉ. सुमन शर्मा
डॉ. दयाल प्यारी सिन्हा, डॉ. मोनिका तिवारी,
डॉ. सनिल कुमार, डॉ. सुनेस्वर प्रसाद
डॉ. के. रत्नाकर

संयोजक

डॉ. बृजराज कुमार सिंह
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर
हिन्दी विभाग, डी. ई. आई.

ICPR
INDIAN COUNCIL OF PHILOSOPHICAL RESEARCH

राष्ट्रीय संगोष्ठी

भारतीय संत मत : दर्शन एवं सामाजिक उपयोगिता

12-13 अप्रैल 2024

आयोजक :
दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट
(मानित विश्वविद्यालय)
दयालबाग़, आगरा

सहयोग :
भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद
नई दिल्ली

संगोष्ठी के बारे में

संत साहित्य का फ़लक अखिल भारतीय है। उत्तर से दक्षिण तक एवं पूरब से पश्चिम तक संतों की वाणी ने भारतीय समाज में फैली कुरीति, भेदभाव, सांप्रदायिक दुर्भावना, धार्मिक कट्टरता आदि के विरुद्ध आंदोलन छेड़ दिया एवं हज़ारों साल से हाशिये पर पड़ी जातियों को जीने का कारण दे दिया। संत साहित्य का इतिहास ही प्रतिरोध का इतिहास रहा है। नाथ साहित्य से ही निर्गुण संत परंपरा ने समाज में फैली कुरीतियों, अंध-विश्वास, धार्मिक श्रेष्ठता के झगड़े, सामंती व्यवस्था का दिखावा आदि का स्पष्ट एवं मुखर विरोध किया। कबीर एवं उत्तरवर्ती संतों ने इस परंपरा को और आगे बढ़ाया तथा जनता की भाषा में मौखिक परंपरा से जनांदोलन खड़ा कर दिया। कबीर, रैदास, दादू, रज्जब आदि अनेक संत कवियों ने अपनी वाणी से जनता को उद्वेलित कर दिया। उन्होंने जाति-पांति के भेदभाव अथवा वर्णाश्रम को नकार दिया एवं ईश्वर पर ईजारा करने वाली जातियों को आड़े हाथों लिया। उन्होंने उनके हर तरह के वर्चस्व को नकार दिया, यहाँ तक कि जाति-पाति के भेद को भी नकार दिया।

संतो ने कविता को श्रम की संस्कृति से जोड़ने का प्रयास किया। संतो ने जिस समाज की रचना का स्वप्न देखा था या जिसके लिए संघर्ष किया था वह कहाँ है? कबीर जिस बेगम देश 'अवधू बेगम देश हमारा' की बात करते हैं - वह कहाँ है, जहां राजा, रंक, फ़क़ीर बादशाह सब एक हैं; बराबर हैं। कबीर के देश में कोई भेदभाव नहीं है, वहाँ अमीर-ग़रीब, ऊंच-नीच, राजा-प्रजा में कोई अंतर नहीं है। कबीर जिस देश का यूटोपिया प्रस्तुत करते हैं उसमें धर्म या जाति के आधार पर कोई भेदभाव नहीं है। या जिस बेगमपुरा शहर की बात रैदास करते हैं। जहाँ रहने वालों को किसी प्रकार का दुःख या असंतोष नहीं होगा। सैकड़ों सालों से वर्णाश्रम का अमानवीय उत्पीड़न और सामंती शोषण झेलने वाली जनता को संतो ने बेगमपुरा का स्वप्न दिखाया। जहाँ समता, समानता, बंधुत्व, भाईचारा और लोगों में प्रेम होगा। ऐसा बेगमपुरा कहाँ है, जहां श्रम करने वाले को हीन नहीं समझा जाएगा बल्कि सबके लिए श्रम की अनिवार्यता होगी। अपने हिस्से का श्रम सबको करना होगा। कोई नौकर और मालिक नहीं होगा। कोई भी कार्य किसी के लिए भी न तो त्याज्य होगा और न ही अनिवार्य होगा अर्थात जन्मना कोई भी अछूत या पीढ़ियों से चले आ रहे कार्य को करने के लिए बाध्य नहीं होगा। कोई सामंत-ज़मींदार या पुरोहित नहीं होगा और न ही कोई बंधुआ मजदूर होगा। ज़ाहिर है उपरोक्त प्रश्नों का जवाब यही हो सकता है कि ऐसी कोई जगह हो ही नहीं सकती। संतो ने जिस देश की कल्पना की वह वास्तविक धरातल पर असंभव है। शायद यही हम अपने आसपास देख भी रहे हैं।

उक्त प्रस्तावित संगोष्ठी में भारतीय ज्ञान परंपरा में संतों के योगदान, उनके दार्शनिक सिद्धांतों एवं उसके सामाजिक सरोकारों पर विचार किया जाएगा।

विचार के बिंदु

- भारतीय ज्ञान परम्परा का विकास
- देशज आधुनिकता एवं मध्यकालीनता
- संत साहित्य में वैश्विक मानव धर्म
- भारतीय चिंतन धारा एवं संत साहित्य
- संत कविता में श्रम की संस्कृति
- संत भक्ति कविता का सामाजिक परिप्रेक्ष्य
- संत कवयित्रियाँ : सृजन और संघर्ष
- अल्पख्यात संत मत और उनकी परंपरा
- संत मत की आधुनिक परंपरा
- बेगमपुर की अवधारणा का सच
- संत कवियों का दर्शन
- संन्यास एवं गार्हस्थ जीवन का द्वंद्व
- वेदान्त एवं अद्वैतवाद से संत कविता का संबंध
- संत कविता की दार्शनिक पृष्ठभूमि
- संत कविता में जीव, माया एवं आत्मा का संबंध
- दक्षिण भारत के संत
- संत कविता में घर की अवधारणा
- संत कविता और सामाजिक सुधार आंदोलन

महत्वपूर्ण तिथियाँ

रजिस्ट्रेशन की अंतिम तिथि : 30 मार्च 2024
शुल्क जमा करने की अंतिम तिfFi : 05 अप्रैल 2024
शोध पत्र जमा करने की अंतिम तिथि : 05 अप्रैल 2024

रजिस्ट्रेशन शुल्क

विद्यार्थियों के लिए : 400 रुपये मात्र
अध्यापकों के लिए : 800 रुपये मात्र

रजिस्ट्रेशन लिंक - https://forms.gle/xVYYpFiNZMhCRKwz5

महत्वपूर्ण निर्देश

शोधार्थी/प्रतिभागी उपरोक्त बिन्दुओं में से किसी विषय पर शोध-पत्र लिख कर नीचे दिए गए ईमेल पर भेज दें। रजिस्ट्रेशन कराने वाले प्रतिभागियों को संगोष्ठी के सभी सत्रों में उपस्थित होना एवं तकनीकी सत्र में शोध पत्र प्रस्तुत करना अनिवार्य होगा। आगरा के बाहर से आने वाले प्रतिभागियों को हॉस्टल में रहने की सुविधा एवं को स्लीपर क्लास (रेल) का यात्रा भत्ता प्रदान किया जाएगा। शोध पत्र हिन्दी अथवा अंग्रेजी भाषा में प्रस्तुत किया जा सकता है।

बैंक डिटेल्स

अकाउंट नेम : डी. ई. आई कांफ्रेंस अकाउंट | बैंक : यूनियन बैंक ऑफ़ इंडिया
अकाउंट नंबर : 305601010291491 | आई. एफ़. एस. सी.
कोड - UBIN0530565 | ब्रांच : दयाल बाग़, आगरा

संपर्क

डॉ. बृजराज कुमार सिंह
ईमेल : brijrajsingh@dei.ac.in
फ़ोन नंबर : 9838709090
: 8354922954

दयालबाग़ के बारे में

आगरा के दयालबाग़ में राधास्वामी सत्संग सभा का मुख्यालय है। लगभग दो सौ साल साल पहले इस मत की शुरुआत हुई, जिसका मुख्यालय यहाँ स्थित है और इसकी कई शाखाएँ-प्रशाखाएँ देश भर में फैली हुई हैं। अलग-अलग शाखाओं के लाखों अनुयायी राधास्वामी नाम में आस्था रखते हुए प्रतिदिन सत्संग एवं अन्य माध्यमों से अपनी आस्था एवं आध्यात्मिक संतुष्टि का निर्वाह करते हैं। प्रारम्भ में जहां दयालबाग़ की स्थापना हुई एवं कॉलोनी बसाई गयी वहाँ बंजर भूमि एवं चारों तरफ़ रेत ही रेत थी। यहाँ के निवासियों ने दिन-रात मेहनत कर के आज लगभग 1200 एकड़ की उपजाऊ भूमि तैयार कर दी जिस में अनाज, फल, सब्जियाँ, पशुओं के लिए चारा आदि का उत्पादन किया जाता है। कमाल की बात है कि इतने बड़े भू भाग पर कृषि कार्य सहकारी विधि से ही होता है।

दयालबाग़ में व्यक्तिगत रूप से किसी के पास कोई संपत्ति नहीं है। भूमि, घर और संस्थान सभी समग्र रूप से समुदाय के हैं। लोग एक समुदाय के रूप में रहते भी हैं और अपने हिस्से का काम करते हैं। उदाहरण के लिए, निवासी ही कॉलोनी की सफ़ाई और रात की सुरक्षा की व्यवस्था करने जैसी विभिन्न ज़िम्मेदारियों को साझा करते हैं। कॉलोनी की अपनी पानी की आपूर्ति, बिजली वितरण और नागरिक सेवाएं हैं। कॉलोनी में अपनी डेयरी है जो दूध की आवश्यकता को पूरा करती है और एक सामुदायिक रसोई है जो अनुयायियों को भोजन की आपूर्ति करती है। एक एलोपैथिक अस्पताल है, जहाँ सभी परामर्श और उपचार हर एक के लिए मुफ्त हैं। कॉलोनी में रहने वाले व्यक्तियों को रोज़गार और आजीविका का स्रोत प्रदान करने के लिए 1916 में मॉडल इंडस्ट्रीज के रूप में जाने जाने वाले लघु उद्योग स्थापित किए गए थे। इसने देश में कुछ अग्रणी कार्य किए हैं। राधास्वामी शहरी सहकारी बैंक और दयालबाग़ महिला बैंक कॉलोनी में विभिन्न संगठनों और व्यक्तियों की वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। दयालबाग़ प्रिंटिंग प्रेस पवित्र पुस्तकों और दो सत्संग साप्ताहिक पत्रों को मुद्रित करता है, एक अंग्रेजी में और दूसरा हिंदी में। दयालबाग़ में दिन सामूहिक प्रार्थना के साथ शुरू होता है, सतसंगी इसके बाद शारीरिक व्यायाम और खेतों तथा कॉलोनी में सेवा के माध्यम से काम करते हैं, तत्पश्चात लोग अपने-अपने व्यवसायों में जाते हैं। शाम को प्रार्थना के साथ ही दिन समाप्त होता है। इन्हीं विशेषताओं को लक्ष्य करके 1956 में देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने दयालबाग़ के बारे में कहा है-"अब तक मैं दूसरों की आँखों से ही दयालबाग़ को देखता आया था। आज अपनी आँखों देखने पर यह ज्ञात हुआ कि सामाजिक उठान के लिए जिस पद्धति से यहाँ शिक्षा दी जाती है, वह अपने देश के लिए गौरव करने की वस्तु है। हमें इस बात का संतोष है कि यहाँ के संस्कार में पले बच्चे अपने देश के भविष्य के दायित्वों को योग्यता पूर्वक निर्वाहित कर सकेंगे।